पुनर्जागरण में राजा राममोहन राय (ब्रह्म समाज) का योगदान

डॉ. के. के. पटेल
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर
(छ.ग.)

प्रारम्भिक जीवन – राजा राममोहन राय को नवीन युग का प्रवर्तक, भारतीय पुनर्जागरण आन्दोलन का पिता तथा **'भारतीय राष्ट्रीयता का देवदूत'** आदि अनेक नामों से जाना जाता है। राजा राममोहन राय निःसन्देह आधुनिक भारत के निर्माता थे। 19वीं सदी का कोई भी धार्मिक अथवा सामाजिक आन्दोलन ऐसा न था जिसके आरम्भ करने में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से राजा राममोहन राय ने सहयोग न दिया हो। राजा राममोहन राय का जन्म 22 मई, 1774 ई. में बंगाल के वर्द्धवान जिले के राधानगर नामक ग्राम में हुआ था।

उनका जन्म कट्टर ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पितामह बंगाल के नवाब की सेवा में थे जिन्हें राय रायन की पदवी मिली थी। राजा राममोहन राय के प्रारम्भिक जीवन के विषय में कोई सही जानकारी नहीं मिलती। प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय विद्यालय में प्राप्त करने के पश्चात् 12 वर्ष की अवस्था में वे फारसी एवं अरबी पढ़ने के लिए पटना गए। उन दिनों पटना इस्लामी शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र था। यहां पर उन्होंने अरबी–फारसी के साथ–साथ कुरान एवं सूफी धर्म का भी अध्ययन किया।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेवा 1803 ई. में वे ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेवा में लगे वे जॉन डिग्बी के अधीन काम करने लगे। दस वर्षों तक डिग्वी के साथ रहकर राजा राममोहन राय अंग्रेजी साहित्य एवं दर्शन के पुजारी वन गए और राजस्व पदाधिकारी की हैसियत से लगभग दस वर्षों तक कम्पनी सरकार की सेवा की। इस बीच उन्होंने काफी पैसा भी कमाया।

कलकत्ता आगमन एवं आत्मीय सभा की स्थापना – 1814 ई. में राममोहन राय कम्पनी की

सेवा से अवकाश प्राप्त कर कलकत्ता में स्थायी तौर पर रहने लगे। यहां अपने युग समर्थकों के सहयोग से उन्होंने 'आत्मीय सभा' की स्थापना की। आत्मीय सभा (Friendly Association) के सदस्य सम्भ्रान्त हिन्दू थे जो प्रगतिशील विचारों के थे। यह मूलतः हिन्दुओं का एक संगठन था। इसके सदस्य सप्ताह में एक बार मिलते थे और हिन्दू धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करते थे। इस सभा का उद्देश्य हिन्दू धर्म को कर्मकाण्डों से मुक्त कराना था। 1819 ई. के पश्चात् आत्मीय सभा लुप्त हो गयी।

ईसाई धर्म का प्रभाव एवं पुस्तक का प्रकाशन —कलकत्ता में राममोहन राय ईसाई धर्म प्रचारकों के सम्पर्क में महात्मा ईसा के उपदेशों से काफी प्रभावित हुए, परन्तु ईसा को उन्होंने देव मानने से इन्कार कर दिया। ईसाई धर्म को भली–भांति समझने के लिए उन्होंने ग्रीक एवं लेटिन भाषाएं पहले ही सीख ली थी। 1820 ई. में उन्होंने The Precepts of Jesus the Guide to Peace and Happiness नामक पुस्तक से अलग करने की कोशिश की।

कलकत्ता वेदान्त कॉलेज की स्थापना एवं वेदान्त का प्रचार वेदान्त के एकेश्वरवादी सिद्धान्त के प्रचार के लिए 1825 ई. में राममोहन राय ने कलकत्ता में वेदान्त या हिन्दू कॉलेज की स्थापना की। उन्होंने उपनिषदों में वर्णित एकेश्वरवादी विचार का निरूपण किया।

ब्रह्म समाज की स्थापना — राममोहन राय में एक महान् सुधारक का अदम्य उत्साह और शक्ति थी। वे बाधाओं से डरे नहीं। 20 अगस्त, 1828 को राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की। इस सभा के प्रथम सचिव ताराचन्द चक्रवर्ती थे।

इंग्लैण्ड प्रस्थान और मृत्यु – नवम्बर 1830 ई. में राममोहन राय इंग्लैण्ड चले गए। यद्यपि वे ईसाई धर्म–सभ्यता से परिचित थे लेकिन स्वभावतः वे अंग्रेजी धर्म व जीवन का अध्ययन करना चाहते थे। 1833 ई. ब्रिटिश सरकार को भारतीयों की दशा से अवगत कराएं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पेन्शन भोक्ता मुगल सम्राट (अकबर द्वितीय) ने राममोहन राय को इस सम्बन्ध में एक आवेदन–पत्र भी दिया था और उसी ने उन्हें राजा की उपाधि दी थी। इंग्लैण्ड में उनका भव्य स्वागत किया गया किन्तु 1833 ई. में ब्रिस्टल में उनकी मृत्यु हो गयी।

राजा राममोहन राय का मूल्यांकन– राजा राममोहन राय एक महान् धर्म सुधारक, महान् समाज सुधारक, महान् राजनीतिक विचारक, अन्तर्राष्ट्रीयता के पुजारी, महान शिक्षाशास्त्री तथा महान् देश–भक्त थे। उन्होंने अंग्रेजी, फारसी, अरबी, संस्कृत ग्रीक, लेटिन, हिब्रू एवं फ्रेंच आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करके अनेक धर्मो का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि सभी धर्मों में एकेश्वरवादी सिद्धान्त का प्रचलन है।

राममोहन हमारे इतिहास के आधुनिक युग के आरम्भ में अवतरित हुए जिस समय भारतीय और विदेशी में भेदभाव की भावना नहीं थी। फिर भी उस समय उन्होंने यह महसूस किया कि उनके युग की सबसे बड़ी चुनौती एकता की थी। उनके हृदय में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, आदि सबके लिए जगह थी। वस्तुतः उनकी आत्मा भारत की आत्मा थी। सभी धर्मो में उनकी आस्था थी।

सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के अतिरिक्त उन्होंने राजनीतिक सुधारों की ओर भी ध्यान दिया। वे भारत की आजादी के समर्थक थे इंग्लैण्ड में उनके सचिव आर्नोट ने लिखा है कि "राजा राममोहन राय के विचार में भारत चालीस वर्ष में स्वतन्त्र हो जाएगा। इस बीच ब्रिटिश सरकार के अधीन रहकर भारत विश्व के सभ्य और स्वतन्त्र देशों की स्थिति प्राप्त कर लेगा।

ब्रह्म समाज एवं उनके सिद्धान्त समाज के लिए प्रेरणा दायक थे। ब्रह्म समाज के प्रवर्तक राजा राममोहन राय थे। उन्होंने हिन्दू धर्म की कुरीतियों को दूर करने के लिए 1828 ई. में ब्रह्म समाज की स्थापना की। वे समाज में प्रचलित जाति–पति छुआछूत, मूर्तिपूजा, बहुविवाह एवं सती–प्रथा आदि को दूर करना चाहते थे।

ब्रम्ह समाज के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित थे–

(1) परमात्मा एक है तथा वह सम्पूर्ण सद्‌गुणों का केन्द्र एवं भण्डार है।

(2) परमात्मा सृष्टि का रचयिता और संरक्षक है।

(3) वह निराकार, शाश्वत, अदृश्य और सत्य है तथा वह न कभी जन्म लेता है न देह धारण करता है।

(4) ईश्वर की पूजा सबके लिए है, उसमें वर्ण अथवा जाति सम्बन्ध का विभेद नहीं है। ईश्वर पूजा, संन्यास, मूर्ति–पूजा एवं कर्मकाण्ड के द्वारा नहीं वल्कि आध्यात्मिक रूप से की जानी चाहिए। धर्म का बाह्य आडम्बर से कोई सम्बन्ध नहीं है।

(5) परमात्मा की पूजा शुद्ध मन से करनी चाहिए लेकिन मूर्ति–पूजा नहीं करनी चाहिए।

(6) मनुष्य को पाप का त्याग कर सभी धर्मों से सत्य को ग्रहण करना चाहिए।

(7) किसी भी पुस्तक को दैवीय नहीं मानना चाहिए क्योंकि कोई भी पुस्तक त्रुटिरहित नहीं होती है।

(8) ईश्वर पापियों एवं पुण्यात्माओं को उनके कर्मों के अनुसार फल देता है।

(9) मनुष्य को प्रज्ञा, परोपकार और पवित्रता द्वारा ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाना चाहिए क्योंकि यही सच्चा मोक्ष है।

ब्रह्म समाज ने निम्नलिखित सामाजिक सुधारों की ओर ध्यान दिलाया–

(1) समाज में प्रचलित जाति–भेदभाव का उन्मूलन करना,

(2) बाल–विवाह, बहुविवाह तथा बाल–हत्या का अन्त,

(3) विधवा–विवाह का प्रचलन करनाय

(4) छुआछूत का अन्त करना,

(5) अन्धविश्वास एवं रूढ़िवादिता का अन्त करना।